GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH
IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0286**

Classification:

Original File No.

Title

Mission Property

Volume:

Running **from year: 1953** **till year:**

Content:

- Booklet of All India Conference of Indian Christian on Mission Property Extracts from 22nd Annual Session held at Calcutta on 29 & 39 Dec 1937.
- Acquistion of the Property of G.E.L.C.Chakradharpur by Govt. 1953.
- Booklet Showing Propertys of G.E.L.Church at deferent Mandalies.

लौ० ट्रसटीज नरदन इण्डिया आगे मौनमोकौर मैं वारिशान कायम मोकामियान मौनमोकौर मालिक जायदाद मनकुला वो गैर-मनकुला हसब मुन्दरजे सौडुल जैल जो पहीले लुथरान मिशन का था वो जिस पर मौनमोकौर बजरिये पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० नवौशते कसटोडियन ऑफ एनीमी परोपारटी बीहार ऐण्ड ओड़िसा बनाम बलेनचरड कौली इसकवायर आई सी. एस. और ऐकट ९ सन १९२१ ई० के मोताबिक हासिल है दखलकार है वो दखल में आज तक चला आता है मौनमोकौर बमोजिब राए सभा के जो तारीख ६ दिसम्बर सन १९२२ ई० वो ८ वो ९ मारच १९२३ ई० को हुआ था वो उस सभा में इत्तफाक राय पास हुआ के जमीन हसब मुन्दरजे सौडुल जैल को साथ इन्तजाम के बमोजिब शरत सौडुल जैल के बन्दोबस्त कर दिया जाय वो कौंसिल भी सौडुल जैल के शरतों को मन्जूर करके सौडुल जैल के जायदादों को लेने के लिये मन्जूर किये हैं वो मोताबिक शरत मुन्दरजे पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० के इन सब लेनी देनी का मन्जूरी लुथरान चरच का ऐडभाइजरी बोर्ड से भी लेली गई है इसलिये ट्रसटीज वो कौंसिल में या तसफिया हुआ के कौंसिल लुथरान मिशन वाला जायदाद मुन्दरजे सौडुल जैल पर हसब शरत मुन्दरजे सौडुल नम्बर २ पर काबीज वो दखीलकार रहेंगे।

सौडुल नम्बर १ बावत शर्त एकरारनामा।

(१) यह के लुथरान मिशन वाला कुल जायदाद पर ट्रसटीज का वैसाही हक उसमें कायम रहेगा जैसा के पहीले से चला आ रहा है।

(२) यह के ट्रसटीज या उनके मोलाजिम लोग को इसमें अखतियार रहेगा के कौंसिल के दिये हुए जायदादों को जाकर जांच करे के कौंसिल जायदादों को ठीक तौर से चला रहे हैं वो ठीक तौर से उस का इन्तजाम किये हुए हैं या नहीं।

(३) यह के कौंसिल हरसाल के पहली जुलाई को जायदाद सौडुल जैल के आमद वो खरच का हिसाब बाजाबते तौर से ट्रसटीज को दिया करेगी वो कौंसिल जायदाद के आमदनी को गिरजों के बाबत खर्च करेगी।

(४) यह के कौन्सिल मो० १०) रुपैया बएवज सालियाना मालगुजारी बाबत दखल रखने कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल जैल के ट्रसटी को दिया करेगी।

(५) यह के कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल जैल का मालगुजारी वो टैकस कौन्सिल दिया करेगी लेकिन रांची वो लोहरदगा वो पुरुलिा वो चाईबासा वो चकरधरपुर मुनसपलेटिओं के मातहद के जायदादों का मालगुजारी वो टैकस वो झरसुगुदा के हेड कोआटर स्टेशन के मातहद वाले जायदादों का मालगुजारी वा टैकस कौन्सिल को देना नहीं होगा।

(६) यह के सब तालाव वो दरखतान (मै लाह दरखतान वो कुल जमीन का इन्तजाम वो पैदावार का तहसील वसुल कौन्सिल करेगी लेकिन ऐडभाइजरी बोर्ड के मातहद के बंगले का जमीन वो ट्रसटी से पाए हुए रैयतों के बंगलों का जमीन से कौन्सिल का सरोकार कुछ नहीं रहेगा और सब और सब बगीचों का इन्तजाम वो तहसील वसुल कौन्सिल करेगी लेकिन उन सब बगीचों पर कौन्सिल का कुछ सरोकार नहीं रहेगा जो ट्रसटी से पाए हुए रैयतों के बंगलों के हाता के अन्दर में पड़ता है या जिस को ऐडभाइजरी बोर्ड और कौन्सिल दोनों मीलकर गरल स्कूल के लिये दे देवेंगे।

(७) यह के चाईबासा चकरधरपुर लोहरदगा पुरुलिया वो रांची मीनसपलेटिओं के मातहद वाले कुल जायदाद का और झरसुगुदा हेड कवाटर स्टेशन का जायदाद का टैकस वो मालगुजारी हसब दस्तुर ट्रसटीज दिया करेगी।

(८) यह के कौन्सिल को यह भी अखतियार रहेगी की मरे हुए दरखतान को काट कर अपने तसरुफ में दर लावे लेकिन जिन्दे गाछों को बेला तहरीरी इजाजत टरसटीज के सेक्रेटरी के नहीं काटेगा खाह वो गाछ फलदार हो या बेफलदार हो।

(९) यह के हसब जैल मकानात को छोड़ कर बाकी कुल रहने वाले जैल मकानात का इन्तजाम वो मरमती और किराया का आदाए वसुली करने का भार कौन्सिल को रहेगी।

तफशील मकानात जीसका इन्तजाम करना वो मरमती करना इस्रा उसका कीराया वशुल करना कौनशील को नहीं होगा।

(क) रांची कमपाउन्ड के मातहद वाले मकानात।
(ख) स्कूल के मास्टरों को रहने वाले मकानात।
[ग] हसब जैल मकानात।

मुरजू	२ बंगला
चाईबासा	२ ,,
चैनपुर	१ ,,
चकरधरपुर	१ ,,
गोविन्दपुर	३ ,,
गोमिला	२ ,,
जाबा	१ ,,
झरसुगुदा	२ ,,
कारीमाटी	१ ,,
खुटीटोली	१ ,,
किनकेल	२ ,,
कोण्डरा	१ ,,
कोरन्जों	१ ,,
लोहरदगा	२ ,,
पुरुलिया	५ ,,
राजगांगपुर	१ ,,
रांची	सब बंगला
सींघानी	१ बंगला
टकरमा	२ ,,
तमाड़	१ ,,
टोकाद	१ ,,

(१०) यह के उपर लिखे हुए २१ जगहों से बाहर वाले बील कुल चर्च और चैपेल का मरमत वो इन्तजाम कौन्सिल किया करेगी लेकिन चटी वो चोरदाग वो डोआंगकेल व घोघर वो जरा-कुदर वो कोटबो वो कुड्डु वो मरचा वो तुजुर वो कोटाम वो तपकरा वो उम्बुलबाहा वो जोनहाटोली वो चौउर वो पथलकुदवा के गीरजों वो चेपलों से कौन्सिल को कोई नवे इलाका वो सरोकार बाबत मरमती के नहीं रहेगा।

(११) यह के कुल गीरजों वो चेपलों वो सीमेटरी और रांची कमपाउण्ड वाले डेराखाना को कौन्सिल बेला भाड़ा के अपने तश-

रुफ में लावेगा और गोस्सनर हाई स्कूल वो गर्ल स्कूल के मकानात वो होशटल को छोड़ कर बीलकुल स्कूल के मकानातों पर स्कूल आवर के बाद कौन्सिल का अखतियार रहेगा के बेला भाड़ा के अपने तशरुफ में लावे।

(१२) यह के जरुरत पड़ने पर कौन्सिल बगैर भाड़ा के किसी बंगले को अपने तशरुफ में लाने के लिये ट्रसटीज के पास दरखास्त कर सकती है चाहे वो बंगला भाड़ा में लगा हो या न लगा हो इसका कोई मोजाका नहीं।

(१३) यह के जायदादों को ठीक तौर से रखने वो चलाने के लिये कौन्सिल हरएक पैस्टर को अखतियार देगी की पैस्टर सब बाबत कानुनी बातें निस्बत वसुली मालगुजारी वगैरह के तहरीरी बातचीत ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिमों के साथ खुदही करेंगे और अगर किसी किसिम का फसाद मालिक या रैयत से उठे तो उस हालत में पैस्टर कौन्सिल और ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को फौरन खबर देंगे वो पैस्टर और गीरजों के मोलाजिम जमीन को आबाद करने के बनीसपत कौन्सिल के जीमेवार होंगे।

(१४) यह के जमीन्दार को मालगुजारी वसुल नहीं होने के वजह से अगर किसी किस्म का नोकशानी पहुंचेगा तो उसका जीमेवार कौन्सिल होगी और मिशन के जायदाद मुन्दरजे सीडुल जेल जो जरपेशगी में हैं उसका रुपैया फौरन ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम के पास पैस्टर लोगों को कौन्सिल तम्बीह करेगी और जरपेशगी का मयाद पुरने का खबर भी पैस्टर ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को दिया करेगी।

(१५) यह के जैसा की होता आरहा है उसी तरह बीलकुल खेत वो मकानात वगैरह पैस्टर वो कैटेकीसट वगैरह के तशरुफ के लिये कौंसिल को दिया जायगा बशरते के पैस्टर वगैरह लुथरान के गीरजों का काम करते रहे लेकिन वे सब जायदाद उन लोग का खास दखल नहीं कहलावेगा और तबदीली या स्तीफा या डीसमिस होने पर पैस्टर वो कैटेकीसट से वह सब जायदाद लेली जायगी।

(१६) यह के मालगुजारी वो टैक्स बमोजिब शर्त ५ वो ६ के जो वसुल होगा वह सब का रसीद बोरट आफ ट्रसटीज के

तरफ से दिया जायगा वो इसका नीगहबार कौंसिल रहेगी और उन सब रसीदों को साल बसाल जांच करने के लिये ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को अखतियार रहेगा।

(१७) यह के रांची को छोड़ कर और सब स्टेशनों में ट्रष्टीज के तरफ से चोकीदार मोकरर है उसका निगहबानी के लिये कौंसिल बजरीए अपने पास्टर के जवाबदेह रहेगी।

(१८) यह के ट्रष्टीज और कौंसिल के दरमेआन अगर कोई किसिम का झगड़ा पैदा होतो ट्रष्टीज का किया हुआ फैसला बहाल रहेगा औ कौंसिल औ दूसरे अशखश के बीच झगड़ा होने से ट्रष्टीज के किये हुए फैसला को कौंसिल को मानना पड़ेगा औ कौंसिल अपना मोकदमा का पैरवी बजरीए लुथेरान चर्च के एकभेसरी बोर्ड के ट्रष्टीज के पास कर सकती है।

१९ यह के ट्रष्टीज यह कौंसिल छव महीना का तहरीरी नोटिस देकर इस एकरारनामे को रद्द कर सकती है।

यही मनेजर ट्रष्टीज बोर्ड इन्डिया
और चेयरमेन लुथेरान चर्च कौंसिल
छोटानागपुर एकरारनामा हाजा लीख
दिया के वखत पर काम आवे।

दसखत औ मोहर दफतर मनेजर बोर्ड औफ ट्रष्टीज नसरत इन्डिया से हवाले किया गया है।

लिः ट्रष्टीज नदरन इण्डिया आगे मिनमोकीर मे वारीशान कायम मोकामिश्रान मिनमोकीर मालिक जायदाद मनकुला औ गैरमनकुला हसब सुन्दरजे सिडयुल जैल नम्बर २ जो पहिले लुथेरान मिशन का था औ जिसपर मिनमोकीर बजरीए पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० नवीश्ते कसटोडियन ऑफ एनिमी प्रोपरटी बिहार एण्ड ओड़िसा बनाम बलेनचर्ड कौली इसकवायर आइ० सी० एस० और ऐक्ट ९ सन १९२१ ई० के मोताबिक हासिल है दखलकार है औ दखल में आजतक चला आता है मिनमोकीर बमोजीब राय सभा के जो के तारीख ८ औ ९ मार्च सन १९२३ ई० को हुआ औ उस में यह राय पास हुआ के जमीन हश्ब सुन्दरजे सिडयुल नम्बर १ को साथ एडभैसरी बोर्ड के वास्ते रखने अच्छी तरह साथ इन्तज़ाम के बमोजीब शरत सिडयुल नम्बर २ को बन्दोबस्त कर दिया जाय औ एडभैसरी बोर्ड भी सिडयुल नम्बर २ के शरतों को मंजूर करके सिडयुल नम्बर १ के जायदादों को लेने के लिये मंजूर किये हैं औ मोताबिक शरत सुन्दरजे पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० के शरत के मोताबिक इन सब लेनी देनी का मंजूरी बड़े लाट साहेब के शीरीस्ता से बजरीए चीठ्ठी नम्बर एफ ४६/५६ जेल मरकुमे १७-७-२२ ई० नवीश्ते जोयन्ट सेक्रेठेरी गभर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया बनाम चीफ सेक्रेठेरी गभर्नमेण्ट ऑफ बिहार एण्ड ओड़िसा के किये हैं और बिहार और ओड़िसा परोभीनसियल लाट साहेब के शीरीस्ता से भी बजरीए चीठी नम्बर ३२५७ सी मरकुमे १३-१२-१९२३ ई० नवीश्ते चीफ सेक्रेठेरी बिहार एण्ड ओड़िसा बनाम सेक्रेटेरी मिशन ट्रष्ट मंजूरी किये हैं इसलिये ट्रष्टीज औ एडभैसरी बोर्ड में यह तसफिया हुआ कि एडभैसरी बोर्ड लुथेरान मिशनवाला जायदाद सुन्दरजे सिडयुल नम्बर १ पर हश्ब शरत सुन्दरजे सिडयुल नम्बर २ के काबिज औ दाखिलकार रहकर जायदाद मनकुला औ गैरमनकुला को अपने हिफाजत में रखे औ जो कुछ नफा या नुकसान जायदाद सुन्दरजे सिडयुल नम्बर २ से पहुंचे उसका जवाबदेह एडभैसरी बोर्ड रहेगी और छापाखाना का इन्तजाम औ मिशन स्टेशन के मातहद के गिरजों को मरम्मत करने का भार भी एडभैसरी बोर्ड को रहेगी इसके अलावे चटी चोरदाग औ दियंगबेल औ घोघोर औ जड़ाकुदर औ कोटवो औ कुड़ु औ मरचा औ तीजुर औ कोटाम औ तपकरा औ उम्बुलवाहा औ जोन्हाटोली औ चिकर औ पथलकुदवा के गिरजों का देखभाल भी एडभैसरी बोर्ड करेगी।

सिडयुल नम्बर १ बाबत ग्ररत एकरारनामा।

१ यह के लुथेरान मिशन वाला कुल जायदाद पर ट्रस्टीज का वैसाही हक हमेशे कायम रहेगी जैसा के पहिले से चला श्रा रहा है।

२ यह के ट्रसटीज या उस के मोलाजीम लोग को हमेशे श्रखतियार रहेगा के जिस वखत चाहे एडभैसरी बोर्ड के दिये हुए जायदादों को जाकर जांच करे के एडभैसरी बोर्ड जायदादों को ठीक तौर से बचा रहे हैं वो ठीक तौर से उसका इन्तजाम किये हुए हैं या नहीं।

३ यह के जब कभी एडभैसरी बोर्ड वो ट्रस्टीज में किसी बात का तफरका हो तो ट्रस्टीज का हुकुम बहाल रहेगा वो श्रगर एडभैसरी बोर्ड श्रौर कोई तीसरे सखश से किसी किसीम का नाइतफाकी हो तो जो फैसला ट्रस्टीज कर देगी उस फैसले को एडभैसरी बोर्ड को मानना पड़ेगा।

४ यह के कुल जायदाद बमोजीब सीडुल नम्बर २ का टैक्स मालगुजारी वसूल करने का जवाबदेह ट्रस्टीज रहेगी।

५ यह के एभैसरी बोर्ड मो० १०) बरवज सालीश्राना मालगुजारी बाबत दखल में रखने कुल जमीन मुन्दरजे सीडुल नम्बर २ के ट्रस्टी को दिया करेगी।

६ यह के एडभैसरी बोर्ड कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल नम्बर २ को ठीक तौर से रखेगा वो साथ हेफाजत वो श्रच्छा इन्तजाम के रखेगा वो सब गिरजाश्रों को ठीक तौर से मरमत करता रहेगा।

७ यह के एडभैसरी बोर्ड को यह भी श्रखतियार रहेगी के मरे हुए दरखतान को काट कर श्रपने तश्रसफ में दर लावे लेकिन जीन्दे गाछों को बेसा तहरीरी इजाजत ट्रस्टीज के सेक्रेटेरी के नहीं काटेगा चाहे वो गाछ फलदार हो या बेफलदार हो।

८ यह के जरुरत पड़ने पर एडभैसरी बोर्ड वास्ते लेने समुचा बंगला या बंगले का कोई हिस्सा के वास्ते ट्रस्टीज के पास इतलाय कर सकता है चाहे वो बंगला कीराया में लगा हो या न लगा हो इसका कोई मोजाका नहीं।

९ यह के ट्रस्टीज खाह एडभैसरी बोर्ड को श्रखतियार होगी के एकरारनामा हाजा को तोड़ देवे लेकिन तोड़ने के छव महीना पहिले नोटिस तहरीरी देना होगा।

सीडुल नम्बर २

तफसील जायदाद मनकुला वो गैर मनकुला।

१ सब स्कूल वो खेलने का मैदान।
२ सब मकानात जो के स्कूल के मास्टरों के रहने के लिये है।
३ नीचे लिखे हुए मिशन के बंगला—

बुरजु	...	२ बंगला
चाइबासा	...	बड़का बंगला
गोबीन्दपुर	...	३ बंगला
कारीमाटी	...	१ ,,
कोरीनजो	...	१ ,,
खुटीटोली	...	१ ,,
कोनबेल	...	२ ,,
कोन्दरा	...	१ ,,
लोहरदगा	...	२ "
पुरुलीश्रा	...	१ ,,
रांची	...	३ ,,

जिसका नाम जकनट बंगला वो चारक हाउस वो वीशप्टे बंगला है।

टोकाद	...	१ बंगला
तमाड़	...	१ ,,
टकरमा	...	२ ,,

४ लोहरदगा वो रांची का श्रसपताल।
५ लोहरदगा का लेपर श्रसाइलम वो फौकसहोम।
६ मकानात जो के श्रसपताल के मोलाजिमों के रहने के लिये रांची वो लोहरदगा में है वो जो खुटीटोली में कमपाउन्डर के रहने के लिये है
७ गोश्नर हाई स्कूल वो मै होस्टेल वो बंगला वो हाता।
८ रांची का थीश्रोलोजिकल शेमीनरी मै हाता वो घर।
९ गोश्नर इभेनजेलिकल लुथेरान परेश रांची।

सही—कनेडे मनेजर बोर्ड श्रौफ ट्रस्टीज
ता: २२ नवम्बर सन १९२३ ई० वा. खास

सही—जे जेड होज चेयरमेन एडभैसरी बोर्ड
गोश्नर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च
छोटानागपुर श्रौर श्रासाम
ता: २३-११-२३ ई०

गोवाह—पी टी मारटिन एस पी जी मिशन रांची
ता: २३-११-२३ ई०

गोवाह—एस के दत ५ रसल इसट्रीट कलकता

CHOTANAGPUR BANKING ASSN. LTD.
RANCHI.

For credit of ______________________

____

By *Cheque Rs.*

Cash Rs.

Total ____________

Entd——Folio.

Account No. ________ *Depositor.*

To/
Secretary,
G. E. L. Church
Ranchi.

Returned with thanks.

J. S. Lugia
1/1/58

ALL-INDIA
CONFERENCE OF INDIAN CHRISTIANS

MISSION PROPERTY

[Extracts from the Twenty-Second Annual Session held at Calcutta, on 29th and 30th December, 1937.]

1
Resolution No. 12

"Resolved that the Conference adopts the following statement on mission properties. It directs its Secretary to send a copy to as many mission boards outside India as possible inviting their comments, and if possible acceptance of the principles enunciated and the practice recommended herein.

Similarly each affiliated association be asked to forward copies to the Secretaries of the missionary societies in their provinces for a similar purpose.

The Conference further resolves that in all cases where sale of mission property is decided upon by any society, to which objection is taken by the Indian members of the Church connected with the Society, the Indian Christian associations should secure all the relevant facts from both parties and give them publicity if necessary. The associations should also help in bridging about 'just' settlement. Wherever necessary the assistance of the All-India Conference of Indian Christians may also be requisitioned.

Resolved further that the replies received from the missionary societies in response to the statement be published in a pamphlet form and the matter again considered next year in the light of them."

2
Statement on Mission Property as Adopted by the Conference

The All-India Conference of Indian Christians is deeply concerned at the misunderstanding, which has arisen in certain places between the Indian Christians and the missionary societies, concerning the sale of so-called mission property. Any public

controversy on such an important issue is likely to injure seriously the common cause which the missions and the members of the Indian Churches share. It is, therefore, advisible that opportunity for friction should be altogether eliminated and this can only be done if there is clear understanding, mutual trust, and sense of fair play and equity. The Conference is aware that some groups have acted hastily with undue emotion and without ascertaining all the relevant facts. At the same time missions on some occasions have taken action in complete defiance of Indian Christian opinion and with utter callousness of their feelings. The Conference disapproves of both these attitudes.

The disposal of property is an important matter to the life of the Indian Church. Therefore, we will welcome a clear statement from responsible missionary leaders as to the basic principles underlying the disposal of property in India.

On our part we take this opportunity to state our views as clearly as we can: (1) It is our firm conviction that in no case should a place of worship be sold. The Indian sentiment is entirely opposed to such a sale. In the opinion of a large number of our community it will be a sacrilegious act. A place of worship cannot be the material property of a missionary society. They are only trustees. The sooner these churches are handed over to duly incorporated Trusts in India the better for all concerned. In spite of this, if decision is made to sell any regular place of worship it should be the duty of all Christians to make known their abhorrence at the deed and take every possible step open to a Christian to combat it.

(2) The other properties stand on a different footing. But with regard to them we consider it essential that responsible Indian members of the church concerned should be taken into fullest confidence.

The Churches in India were brought into existence by the older Churches of the West. We are not unmindful of the most precious gift we have thus received from them. We are grateful for their long and devoted ministry. They had accepted the responsible role of a trustee. Money and property was entrusted to them for a dual purpose, namely, the spread of the Gospel and the nurture and development of the young Church, the result of their labours. It, therefore, becomes incumbent upon the societies to exercise vigilence and to consult opinion in India at every step.

(3) The mission properties may be classified into four categories:

(*a*) Mission bungalows and other similar property, primarily constructed or purchased for the use and comfort for the missionaries sent from abroad. If such properties are no longer required they are obviously the assets of the society to which they belong. No objection can be taken to their sale by any reasonable person, and to the appropriation of their sale proceeds by them for their exclusive use.

(*b*) There are some properties used for institutions designed to propagate the Gospel in India like schools, hospitals, orphanages, etc., the entire money for the construction of which was subscribed by the Christians of the West.

If the opinion is agreed that such institutions are no longer required for their original purpose, land and buildings may well be sold. In most cases the value of land would have increased enormously, and it does not seem right for a missionary society to appropriate the whole of the 'Unearned Increment' for their central funds. In most other countries of the world such increments are subject to heavy taxation. Therefore, the societies should ponder if morally an equity has not been established whereby parts of the proceeds at least should not be left in India for the use of the Church in India.

(*c*) There are institutions of the category mentioned above, the funds for which were partly subscribed in India and partly sent from abroad. In some cases the land was given by the Government for a 'mere song,' or liberal grants were contributed by the State from the revenues of India. Surely in such cases the accretions to the original value for which the land was purchased and buildings constructed are divisible in proportion between the mission representing the older Churches and the younger Church. This is but equitable. Any departure from this is lamentable and morally indefensible.

(*d*) There was property set apart exclusively or mainly for the use of the Christians or for the nurture of the young Church. With regard to these surely the societies are only trustees. Missions have been at work for over a hundred years. During this time many religious sects have arisen in India. They were not under the leading strings of an outside authority and today they have built and own institutions necessary for their existence and growth. If missions had adopted a bolder policy the Church in India might have been in a much stronger position. At any rate, irrespective of the source from which the money came, it was given for the Church and the Christians. Missions were only trustees of their

young ward. And without doubt if such properties are sold, the money belongs to the Church morally, and it should be passed on to the Church or at least used in India for its betterment.

These are simple principles, but in their application difficulties may arise. However, if the Indian Church is taken in full confidence in each case, and due weightage given to its views, and amicable settlement could be secured without any tension or misunderstanding. Let the missions remember that the Indian Church is the product of their labours, and the Indian Church is not unmindful of the debt of obligation to the mission. Now times, however, require new relationships, and the 'ward' has a right to be consulted as a partner and a co-sharer in the work which is and should be the common concern of both.

Office :
ALL-INDIA CONFERENCE OF
INDIAN CHRISTIANS,
c/o P. O. BOX 133, LAHORE.

B. L. RALLIA RAM,
Hony. General Secretary.

The following books written by Canon W. P. Hares may be obtained from—

(1) Canon W. P. Hares, Gojra, Lyallpur District, Punjab.
or from

(2) The Manager, Book Room, C. M. S. House, 6 Salisbury Square, London, E.C. 4.

Price 2*d*. each, postage 1*d*. ; or 2 as. each, postage 3 ps.
12 copies, 2*s*. or Rs. 1-8 postage free.

1. The Doctrine of Purgatory as Taught by the Church of Rome. *Pages 22*, 2nd Ed.
2. The Council of Trent and the Creed of Pope Pius IV. *Pages 14.*
3. Some Claims of the Church of Rome regarding the Councils of the Church. *Pages 16.*
4. The Growth of the Power of the Papacy. *Pages 32*, 2nd Ed.
5. The Attitude of the Church of Rome towards other Members of the Catholic and Apostolic Church. *Pages 32*, 2nd Ed.
6. The Church of Rome and her Teaching about the Word of God. *Pages 24*, 2nd Ed.
7. The Infallible Church and her Infallible Guide. The Roman Claim to Infallibility. *Pages 32*, 2nd Ed.
8. The Revolt against the Supremacy of the Church of Rome. *Pages 25*; 2nd Ed.
9. The Doctrine of Transubstantiation as Taught in the Church of Rome. *Pages 26*, 2nd Ed.
10. The Holy Communion of the Catholic and Apostolic Church and the Mass of the Church of Rome. *Pages 28*, 2nd Ed.
11. The Invocation of Saints, and the Veneration, Adoration and Worship of Images and Relics as Taught and Practised in the Church of Rome. *Pages 22*, 2nd Ed.
12. The Doctrine of Indulgences as Taught by the Church of Rome. *Pages 22*, 2nd Ed.
13. The One Holy Catholic and Apostolic Church and the Church of Rome. *Pages 24*, 2nd Ed.
14. The Supremacy of St. Peter. His Commission and Position in the Apostolic Church. *Pages 29*, 2nd Ed.
15. St. Peter as Bishop of Rome, and the Popes as his Successors. *Pages 20*, 2nd Ed.
16. The Rule of Faith of the Catholic and Apostolic Church and of the Church of Rome. *Pages 22*, 2nd Ed.
17. The Blesssed Virgin Mary and Mariolatry. *Pages 32*, 3rd Ed.
18. The Seven Sacraments of the Church of Rome. *Pages 16.*
19. Some Claims of the Church of Rome Examined. *Pages 27.*
20. Some Doctrines of the Church of Rome Examined. *Pages 32.*

Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. *Pages 8,* 4th Ed. 1/6 or Re. 1 for 50 copies.

This booklet has had a very wide circulation, and is now in its fourth edition in English. Since 1937 it has been translated and published in Persian Urdu, Spanish, Oriya, Telegu, Tamil, Santali, Singhalese, Bengali, Kanarese, Gujerati, Marathi, Sindi, Assamese, Burmese, Swahili and Hindi, and will shortly be available in Chinese, Afrikaans, Garo, Mundari and Malayalam. For particulars of these see overleaf.

SECOND EDITION

THE TEACHING AND PRACTICE OF THE CHURCH OF ROME IN INDIA.

EXAMINED BY

REVEREND W. P. HARES, B.A.,

C. M. S. Missionary, Gojra, Panjab, Hon. Canon of Lahore Cathedral, Examining Chaplain to the Lord Bishop of Lahore.

Pages 416 Rs. 1-8-0 or 2 Shillings.

CONTENTS

Introduction.
I. Some Claims of the Church of Rome.
II. The Rule of Faith.
III. The Supremacy of St. Peter—His Commission.
IV. The Supremacy of St. Peter—His position in the Apostolic Church.
V. St. Peter, Bishop of Rome.
VI. The Popes of Rome as the Successors of St. Peter.
VII. The Growth of the Power of the Papacy.
VIII. The Revolt against the Supremacy of Rome.
IX. Rome's Attitude in the Past towards other Members of the Catholic Church.
X. The Teaching of the Church of Rome today about Protestants.
XI. The Church of Rome and the Word of God.
XII. The Mutilation of the Word of God by the Roman Church.
XIII. The Infallible Church and her Infallible Guide.
XIV. The Doctrine of Transubstantiation.
XV. The Holy Communion of the Catholic and Apostolic Church and the Mass of the Church of Rome.
XVI. The Roman Mass and Superstitious Practices.
XVII. Purgatory.
XVIII. Indulgences.
XIX. The Blessed Virgin Mary and Mariolatory.
XX. The Invocation of Saints.
XXI. The Adoration of Images.
XXII. The Veneration, Adoration, and Worship of Relics.
XXIII. The Seven Sacraments.
XXIV. The One Holy Catholic and Apostolic Church.

SOME PRESS NOTICES

EXTRACTS FROM REVIEWS

Canon Hares selects three books published by Roman Catholic priests in Lahore, and subjects them to the test of Holy Scripture and History. . . . .

Canon Hares shows the falsity of these and other assertions. His answers are adequate, without undue elaboration, and his quotations from the Fathers are apt. A large amount of work has been put into this book. This book will be useful to any who desire to test the claims of the Church of Rome. Altogether the book forms the most helpful short compendium of the whole controversy since Littledale's *Plain Reasons* was published.—" THE RECORD, CHURCH NEWSPAPER."

In these pamphlets Mr. Hares has availed himself of some of the latest discoveries of historical research. Priests in charge of congregations where Roman Catholic writers try to undermine the faith of their people would do well to read these pamphlets and put them in the hands of their people.—P. G. B. IN " CALCUTTA DIOCESAN RECORD," DECEMBER, 1936.

Canon Hares, who has had many years of experience in missionary work in the villages of the Panjab, has found himself constrained to produce these books, with the object of supplying to his people a defence against the propaganda to which he finds them subjected at the hands of the Roman Catholic Church. His exposition of Christianity is based upon adequate New Testament and patristic studies, and he justly hopes that what he has written may be of use to other countries than India.—REV. W. PATON IN " INTERNATIONAL REVIEW OF MISSIONS."

The thanks of the whole Church are due to Canon Hares for his scholarly statement of the position held by the Roman Church with regard to the Sacrament of Holy Communion as contrasted with that held by the Church of England and its daughter Church, the Church of India, Burma and Ceylon.

This booklet is written with the sweet reasonableness that should always characterize works on such a subject, and it cannot possibly offend any one who is really searching for the truth. There is a quiet dignity about the book, but withal, a refreshing clarity of thought and lucid argument that compel attention. The logic is irresistible and shattering indeed to those who hold the Roman position.

By drawing his material from Roman sources the Canon has made any adequate answer to such a book a very difficult and embarrassing task even for an " Infallible Church." There is bound to be a keen demand for such a book in India and England and elsewhere, as we have long needed such a clear and simple statement to put into the hands of a very large number of people who have the haziest of notions about the difference between the Roman Mass and the Sacrament of Holy Communion.—" LAHORE DIOCESAN MAGAZINE," REV. C. W. HASKELL, C. M. S., KARACHI.

Most of us loathe controversy and I have no doubt that Canon Hares dislikes it as much as any of us, but it has been forced upon him, and he has valiantly taken up the cudgels in defence of his flock. But some of the old cudgels, to continue the metaphor, were not quite clean, and were rather splintered in places and did not lend themselves to the best kind of fighting. In this book we now have them clean and polished, so that none need hesitate to use them. . . .Within this small compass is collected an amazing wealth of facts, duly authenticated, showing the falsity and futility of the Roman position. All who come up against the Romans should certainly study this carefully compiled book.—REV. C. A. BENDER, PRINCIPAL OF EDWARDES' COLLEGE, PESHAWAR, IN "LAHORE DIOCESAN MAGAZINE."

Canon Hares' pamphlet is a scholary examination of the premises on which this doctrine (of Purgatory) has been founded . . . an Ex-Roman priest, who has just joined our Church, endorses everything that Canon Hares says. . . . Canon Hares has done us a service in thus reminding us of the falsity of the Roman position. We would do well to buy copies of this pamphlet, and persuade our people to read it and give it to their friends. REV. J. R. PEACEY, PRINCIPAL OF BISHOP'S COLLEGE, CALCUTTA.

Canon Hares has been the victim of an unprovoked assault on the part of Roman agents, who have not hesitated to employ arguments and methods which we had thought were as dead as the Inquisition ; he has written these booklets to assure his people that our Church is Catholic and Apostolic, that our doctrine, our "Ethos," our Ethics, are those of the Primitive and undivided Church, that our Sacraments and Ministry are valid.

Canon Hares writes as a priest of the Catholic Church and not as a Protestant ranter ; his booklets are not the vituperations of the rabid controversialist, but the reasoned and careful statements of a Catholic priest, convinced that his orders and his teaching are of Christ and the Apostles. —REV. A. H. TILT, IN "LAHORE DIOCESAN MAGAZINE."

Thousands of Christians have cause to thank Canon Hares for placing at their disposal authoritative information about that branch of the Catholic Church which has the audacity to claim that there is no salvation for those who reject her comparatively modern creed.—"LUCKNOW DIOCESAN CHRONICLE," JULY 1937.

Canon Hares deals with the crucial questions of the Roman claims, and deals with them both firmly and fairly. . . . He is to be congratulated on the temperate tone of his pamphlets, the absence of controversial bitterness and the strict relevance of all that he writes. He is thereby the more convincing.—REV. P. N. F. YOUNG IN "LAHORE DIOCESAN MAGAZINE."

SOME EXTRACTS FROM LETTERS.

Your tracts seem most admirable and the reasonableness with which the case is stated should commend them to everyone who has an open mind to accept what is true. Would it be allowable to have them or some of them translated into Santali or Hindi?—FOSS CALCUTTA, METROPOLITAN OF ALL INDIA.

I congratulate you on the valuable series of books you have prepared for the use of the Missions and Churches. I am sure they will do much to help us combat the evils of the teaching and practices of the Roman Catholics. BISHOP B. T. BADLEY, METHODIST EPISCOPAL CHURCH, DELHI.

I am sending the list and books to the Editor of the *Diocesan Chronicle*, suggesting that he should give publicity to the books. It seems that you have undertaken a very valuable piece of work and will earn the gratitude of a great many people.—CHARLES LUCKNOW, ALLAHABAD.

Very many thanks for allowing me also to have a copy of your book. I shall be very glad to possess one, as to judge from the booklets, you have presented the argument more reasonably and effectively than is often done in controversial writing.—E. A. L. MOORE, BISHOP IN TRAVANCORE AND COCHIN.

Your book on Romanism is just what I have been waiting for. Kindly accept my order for forty copies.—REV. J. H. COLVIN, AMERICAN UNITED PRESBYTERIAN MISSION, GURDASPUR.

I like what you have done in this booklet very much, and the table of contents of your book "The Teaching and Practice of the Church of Rome in India" appears to be very attractive and valuable. I believe that it will be a great help to our students in our theological seminary. I sincerely hope that this book may be put into Telegu in the near future.—REV. DR. A. M. BOGGS, THEOLOGICAL SEMINARY, RAMAPATAM, MADRAS PRESIDENCY.

I have read your books with interest and profit. I do appreciate the great service you have done to the Churches in India by exposing the heresies of Roman Catholicism, and the putting in such easy and simple language that it is within the reach of every Christian worker. I do wish that our teachers, preachers and pastors should read these books. I have used them as text-books both in Urdu and English classes.—REV. VAZIR CHAND, B.A., PROFESSOR, THEOLOGICAL SEMINARY, GUJRANWALA.

It is a pleasure to read controversial books so free from bitterness and unfair statements.—A. DAVIES, DEAN OF WORCESTER.

Many thanks for allowing me to run through your valuable pamphlets. Good at first, their value has been amplified by the additional citations—those from the Fathers are irrefutable.—G. E. ALISON WEEKS, L.L.D., F.R. HIST. S.

A Book in Persian Urdu written especially for all Church and Mission Workers.

THE DOCTRINE OF THE CHURCH OF ROME— IS IT TRUE? Pages 270. Annas 8.

SECOND EDITION.

Price 6 annas for orders of 25 copies

Several of the English booklets advertised on page 1 have been translated and published in a number of languages, and can be obtained as noted under each language heading.

(1) PERSIAN URDU

1. The Holy Catholic and Apostolic Church and the Church of Rome. Pages 16—¼ anna.
2. The Supremacy and Authority of St. Peter. Pages 16—¼ anna.
3. Was St. Peter Bishop of Rome for Twenty-five Years? Pages 8—¼ anna.
4. Purgatory. Pages 24—¼ anna.
5. Some Claims of the Church of Rome Examined. Pages 24—¼ anna.
6. The Council of Trent. Pages 12—¼ anna.
7. Concerning Prayers to the Departed Saints. Pages 8—¼ anna.
8. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 16—¼ anna.
9. The Blessed Virgin Mary and Mariolatry. Pages 24—¼ anna.
10. The Doctrine of Transubstantiation. Pages 18—¼ anna.
11. What shall we believe, the Teaching of the Church of Rome or the Teaching of the Bible? Pages 23—½ anna.
12. The Infallible Church and its Infallible Guide. Pages 24—¼ anna.
13. The Power of the Keys. Pages 8—¼ anna.
14. The Holy Communion of the Catholic and Apostolic Church and the Mass of the Church of Rome. Pages 24—¼ anna.
15. The Rule of Faith of the Catholic and Apostolic Church and that of the Church of Rome. Pages 20—¼ anna.
16. The Word of God and the Church of Rome. Pages 15—¼ anna.
17. The Roman Doctrine of Indulgences. Pages 16—¼ anna.

All the above can be obtained from :

CANON W. P. HARES, GOJRA,
Lyallpur District, Panjab, or from
The Panjab Religious Book Society, Anarkali, Lahore.
Re. 1 for 50 copies assorted, post free.

(2) TELEGU

1. Some Claims of the Church of Rome Examined. Pages 16—1 anna each or 10 annas per dozen.
2. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 12—1 anna each or 10 annas per dozen.

Obtainable from :

THE BAPTIST MISSION BOOK DEPOT.
COCANADA, East Godavari District.

3. The One Holy Catholic and Apostolic Church and the Church of Rome. Pages 35—1 anna each or 10 annas per dozen.

Obtainable from :

THE REV. J. SATYA JOSEPH, B.D.,
PULIVENDLA, Cuddapah District.

(3) SINGHALESE

1. The Supremacy of St. Peter. Pages 24—Cts. 10 each.
2. Some Claims of the Church of Rome Examined. Cts. 10 each.
3. Some Doctrines of the Church of Rome Examined. Cts. 10 each.
4. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 12—Rs. 3 per 100 copies.

Obtainable from :

THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY,
Dam Street, PETTAH, Colombo, Ceylon.

(4) KANARESE

1. The Church of Rome and her Teaching about the Word of God. 1 anna each or 10 annas per dozen.
2. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 8. 3 pies each.

Obtainable from :

THE REV. DR. P. E. BURCKHARDT,
Basel Ev. Mission, MANGALORE, South Kanara.

(5) SPANISH

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 8. 2 copies for 5c or 5 for 10c.

Obtainable from :

THE BOOK ROOM, "EL INCA,"
Apartado 1277, LIMA, Peru.

(6) SANTALI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 11. Ps. 3 each, Rs. 1-4 per 100 copies.
2. Some Claims of the Church of Rome. Ps. 3 each, Rs. 1-4 for 100.
3. Some Claims of the Church of Rome. Ps. 3 each, Re. 1-4-0 for 100.
4. The Rule of Faith. Ps. 3 each, Re. 1-4-0 for 100.

Obtainable from :

REV. F. L. TAYLOR,
PATHRA, Godda, Santal Parganas.

(7) SWAHILI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.

Obtainable from :

THE REV. A. R. PITTWAY,
C. M. S., Box 360, NAIROBI, Kenya.

(8) TAMIL

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Pages 15. Ps. 6 each.

Obtainable from :

THE CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY,
Post Box 501, Park Town, MADRAS.

2. The Infallible Church and her Infallible Guide. Pages 32 As. 2 each.

Obtainable from :

THE E. L. M. PUBLISHING HOUSE,
TRANQUEBAR, S. I. R.

Pages 32.

(9) ORIYA

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Pages 24. Ps. 3.
   Obtainable from:
   THE REV. A. PRADHAN,
   Bhikari Press, SAMBALPUR, B. N. Ry.

(10) BURMESE

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Ps. 3.
   Obtainable from:
   MRS. K. EVANS,
   Mayo Road, AKYAB, Burma.

(11) ASSAMESE

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome. Ps. 3.
   Obtainable from:
   REV. J. SELANDER,
   American Baptist Mission, SADIYA, Assam.

(12) SINDI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Pages 10. Ps. 3. Re. 1-4-0 for 100 copies.
   Obtainable from:
   REV. BHAGTANI, C.M.S.,
   HYDERABAD, Sind.

(13) GUJERATI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Pages 10. Ps. 3 each. Re. 1-4 for 100 copies.
   Obtainable from:
   MR. JAMES UKABHAI,
   I. P. Mission House, AHMEDABAD.

(14) BENGALI

1. The Doctrine of Indulgences as Taught by the Church of Rome.
2. The Growth of the Power of the Papacy.
3. The Revolt against the Supremacy of Rome.
   Obtainable from:
   THE REV. K. C. DAS, B.A.,
   Baptist Mission, KHULNA.
4. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Ps. 3. Re. 1-4-0 for 100 copies.
   Obtainable from:
   THE CHRISTIAN LITERATURE BOARD,
   131-1 West Range, Park Circus, CALCUTTA.

(15) HINDI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Ps. 3. Re. 1-4-0 for 100 copies.
   Obtainable from:
   REV. J. C. CHRISTIE,
   LATEHAR, E.I.R., Bihar.

(16) SILOZI

1. Fifty Reasons why I have not joined the Church of Rome.
   Obtainable from:
   REV. A. JALLA, C.B.E.,
   Paris Evangelical Mission,
   MABUMBU, P. O. MONGU, Northern Rhodesia.

.dia Printing & Publishing Co.. Lahore.

नोटिस ।

१। लगान में कमी करने के लिये जो नया छोटानागपुर टेनैन्सी अमेण्डमेंट ऐक्ट १९३८ में बना है वह ता० ८ जून १९३८ से जारी हो गया है।

२। लगान घटाने के बारे में जो नया कानून बना है वह यह है:— डिप्टी कमिश्नर नीचे लिखे हुए कारणों से कायमी और दखलकारी होल्डिंग का लगान कम कर सकते हैं:—

(क) दफा ३२(ए) सब दफा (ए) के मुताबिक दावी करने से १ जनवरी १९११ से लगायत ३१ दिसम्बर १९३६ के अन्दर जिस कदर एजाफा दफा २९ के मुताबिक हुआ हो सब को रद कर दिया जा सकता है।

नोट:—वाजे रहे कि दफा ८५ के कार्रवाई से जो लगान बढ़ा है उसकी कमी इस सब दफा के मुताबिक नहीं हो सकती है, लेकिन ऐसे रैयत नीचे लिखे हुए सब दफा (ई) के मुताबिक लगान कमी कराने की दरखास्त कर सकते हैं।

(ख) दफा ३२(ए) सब दफा (बी) के मुताबिक दावी करने से १ जनवरी १९११ से लगायत ३१ दिसम्बर १९३६ के अन्दर दफा ६१ के मुताबिक जिस कदर भावली से नकदी लगान कायम किया गया हो वह लगान नीचे लिखे हिसाब से कम किया जायगा:—

जिस साल में लगान भावली से नगदी किया गया उसके पहले दस साल के गल्ले के भाव का औसत निकाला जायगा और उस औसत भाव को मौजदा

गल्ले के भाव से मिलाया जायगा। उन दस साल के औसत भाव से मौजूदा भाव जिस कदर कम पाया जायगा मौजूदा लगान भो उसी कदर घटा दिया जायगा।

(ग) दफा ३३(ए) सब दफा (सो) के मुताबिक लगान उस हालत में कम किया जा सकता है जहां कि मोसम्मम होल्डिंग में या उस का कुछ हिस्सा में, बिना रैयत के दोष के, बालू जम गया हो या वह पानो के अन्दर चला गया हो या इसी तरह के किसी खास वजह से चन्द रोज के लिये या बराबर के लिये उसका पैदावार कम हो गया हो।

(घ) दफा ३३(ए) सब दफा (डी) के मुताबिक वहां लगान कम हो सकता है जहां कि मालिक आबपासी के जरिया को, जिसके मरम्मत के लिये वह जिम्मेवार है, ठोक तौर से मरम्मत नहीं रखा हो।

(ङ) गल्ले का औसत भाव कम हो जाने के कारण हरएक रैयत को सब दफा (ई) के मुताबिक लगान में कमी कराने को दरखास्त करने का हक है। इस सब दफा के मुताबिक रैयत का मौजूदा लगान जिस साल कायम हुआ था उस समय के गल्ले का औसत भाव आज कल के गल्ले के औसत भाव से मिलाया जायगा और आज कल के गल्ले के भाव में जिस कदर कमी पायी जायगी मौजूदा लगान भो उसो कदर घटा दिया जायगा।

(च) दफा ३३ (ए) सब दफा (एफ) के मुताबिक वहां लगान कम हो सकता है जहां रैयत का रकवा (एरिया) उस रकवे से कम पाया जाय जिस रकवे के लिये वह लगान देता आ रहा हो।

३। ऊपर लिखे हुए सब दफा (ए) या (बी) के मुताबिक लगान में कमी कराने के लिये दरखास्त दो साल के अन्दर दी जा सकती है। इस हिसाब से ७ जून १९४० तक इस तरह को दरखास्त दी जा सकती है। लेकिन रैयतों को इतने दिनों तक ठहरने को जरूरत नहीं है। वे जितना जल्द दरखास्त [illegible]नाहो जल्द उनको लाभ पहुँचेगा। इसलिये उन्हें लगान कमी की

दरखास्त जहां तक जल्द हो सके दे देनी चाहिये। याद रहे कि दरखास्त देने का यह दो वर्ष का मैयाद केवल दफा ३३ (ए) सब दफा (ए) और (बी) के लिये है और सब दफाओं के लिये कोई मैयाद नहीं है, लेकिन दो वर्ष के अन्दर दिगर दफाओं के अन्दर दरखास्त देने से केवल चार आने का कोर्ट फीस लगेगा।

४। किसी गांव के एक जमींदार की जमींदारी में सब दरखास्त अलग अलग दी जाने पर भी एक साथ फैसला की जा सकती है। इससे जमींदार और रैयत दोनों को सुभीता होगा।

इस तरह की सभी दरखास्तों को लेने के लिये हर थाना में किसी खास तारीख को एक अफसर भेजा जायगा जो डिप्टी कमिश्नर की तरफ से दरखास्तों को लेगा। किस तारीख को वह अफसर वहां जायगा उस की खबर गांव वालों को पहले से कर दी जायगी।

५। जो रैयत इन दफाओं ३३(ए) सब दफा (ए) और (बी) के मुताबिक दरखास्त देना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वे अपनी दरखास्त साथ के नमूने के फार्म के मुताबिक पैसाही कागज पर तैयार कराकर रखें और हर दरखास्त पर चार आने का कोर्ट फीस स्टाम्प लगा दें। अगर कोई रैयत किसी वजह से फार्म में दिये गये हुये सब खानों को पूरा न भर सके, मसलन अगर वह दफा २९ एजाफे के मोकदमे या दफा ६१ मोकदमे का नम्बर न दे सके तो उसे खाली छोड़ दे सकता है लेकिन जिस साल मोकदमा हुआ था उस साल का जिक्र जरूर कर देगा।

जिला.................. डिप्टी कमिश्नर..............

साल

भाव को मौजदा

नमूना फारम देने दरखास्त अन्दर दफा ३३(ए)।

डिप्टी कमिश्नर जिला..........................

नाम मौजा..........................थाना..........................थाना न०..........

नाम जमींदार मे शकूनत और खेवट न०......................................

मैं / हमलोग ______ इस फारम के नीचे लिखे हुए होल्डिंग का दखलकार रैयत होने की हैसियत से छोटानागपुर रैयती कानून के दफा ३३(ए) के सब दफा (ए) और (बी) के मुताबिक बजरिये इस दरखास्त के दावो करता हूं / करते हैं ______ कि निचे दर्ज किया हुआ एजाफा जो दफा २९ के मुताबिक हो चुका है रद कर दिया जाय और जो दफा ६१ के मुताबिक जो लगान पहले कायम हो चुका है वह दफा ३३(ए) सब दफा (बी) के मुताबिक घटा दिया जाय।

नमूना फारम दफा ३३(ए) सब दफा (ए):—

शुमार न०	नाम रैयत मे वल्दियत कौमियत और शकनत।	खतियान न०	सर्वे प्लाट न०	दफा २९ के मुकदमे का न० और साल अगर मालूम हो।	एजाफा के पहले क्या लगान था।	एजाफा के बाद जो लगान हुआ।	किस साल से एजाफा का लगान अमल में लाया गया	कैफियत।
१	२	३	४	५	६	७	८	९

की ... [illegible]

कै... नाहो ... [illegible]

दस्तखत रैयत।

नमूना फारम दफा ३३ (ए) सब दफा (बी) ।

१	मुक़ार नं०	
२	नाम रैयत मै वल्दियत कौमियत और सकूनत ।	
३	खतियान नं०	
४	प्लाट नं० और रकबा ।	
५	दफा ६१ के मोकदमे का नं० और साल ।	
६	नाम अदालत जो दफा ६१ का लगान कायम किया ।	
७	दफा ६१ से जो लगान कायम हुआ ।	
८	किस साल से दफा ६१ का लगान अमल में लाया गया ।	
९	कैफियत ।	

...ल

...सत भाव को मौजदा

नमूना फारम देने दरखास्त अन्दर दफा ३३ (ए) सब दफा (सी), (डी), (ई) और (एफ)।

डिप्टी कमिश्नर जिला........................

नाम मौजा.........थाना.........थाना न०.........नाम जमींदार.........

मैं सकूनत और खेवट न०......... मैं / हमलोग इस फारम के नीचे लिखे हुये होल्डिंग का दखलकार रैयत होने की हैसियत से छोटानागपूर टेनैंसी ऐक्ट के दफा ३३ (ए) सब दफा (सी) (डी), (ई) और (एफ) के मुताबिक बजरिये इस दरखास्त के दावी करता हूं / करते हैं कि खाना (६) के लिखे हुये वजह या वजहों के लगान घटा दिया जाय।

शुमार न०	नाम रैयत मै वल्दियत कौमियत और सकूनत।	खतियान न०	सर्वे प्लाट न० और रकबा।	मौजूदा लगान।	वजह करने दावी लगान कम करने के लिये।	किस साल से मौजूदा लगान दिया जा रहा है।	कैफियत।
१	२	३	४	५	६	७	८

दस्तखत रैयत।

का... ...
...ं...नाहो ...—169,653—16-9-1938—KP

लौ० ट्रसटीज नदरन इण्डिया आगे मौनमोकीर मै वारिशान काएम मोकामियान मौनमोकीर मालिक जायदाद मनकुला वो गैर-मनकुला हसब मुन्दरजे सीडुल जैल जो पहीले लुथरान मिशन का था वो जिस पर मौनमोकीर बजरिये पटा मरकुमे १३-१०-१९ इ० नवीशते कसटोडियन ओफ एनीमी परोपारटी बीहार ऐन्ड ओड़िसा बनाम बलेनचरड कोली इसकवाएर आई सी. एस. ओर ऐकट ९ सन १९२१ ई० के मोताबिक दाखिल है दखलकार है वो दखल में आज तक चला आता है मौनमोकीर बमोजिब राए सभा के जो तारीख ६ दिसम्बर सन १९२२ ई० वो ८ वो ९ मारच १९२३ ई० को हुआ था वो उस सभा में इत्तेफाक राय पास हुआ के जमीन हसब मुन्दरजे सीडुल जैल को साथ इन्तजाम के बमोजिब शरत सीडुल जैल के बन्दोबस्त कर दिया जाय वो कौंसिल भी सीडुल जैल के शरतों को मन्जूर करके सीडुल जैल के जायदादों को लेने के लिये मन्जूर किये हैं वो मोताबिक शरत मुन्दरजे पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० के इन सब लेनी देनी का मन्जूरी लुथरान चरच का ऐडभाइजरी बोर्ड से भी लेली गई है इसलिये ट्रसटीज वो कौंसिल में या तश्रफिआ हुआ के कौंसिल लुथरान मिशन वाला जायदाद मुन्दरजे सीडुल जैल पर हसब शरत मुन्दरजे सीडुल नम्बर २ पर काबीज वो दखीलकार रहेंगे।

सीडुल नम्बर १ बावत शर्त एकरारनामा।

(१) यह के लुथरान मिशन वाला कुल जायदाद पर ट्रसटीज का वैसाही हक हमेसे कायम रहेगा जैसा के पहीले से चला आ रहा है।

(२) यह के ट्रसटीज या उनके मोलाजिम लोग को हमेसे अख्तियार रहेगा के कौंसिल के दिये हुए जायदादों को जाकर जांच करे के कौंसिल जायदादों को ठीक तौर से चला रहे हैं वो ठीक तौर से उस का इन्तजाम किये हुए हैं या नहीं।

(३) यह के कौंसिल हरसाल के पहली जुलाई को जायदाद सीडुल जैल के आमद वो खरच का हिसाब बाजाब्ते तौर से ट्रसटीज को दिया करेगी वो कौंसिल जायदाद के आमदनी को गिरजों के बाबत खर्च करेगी।

(४) यह कि कौन्सिल मो० १०) रुपैया बएवज सालियाना मालगुजारी बाबत दखल रखने कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल जैल के ट्रसटी को दिया करेगी।

(५) यह कि कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल जेल का मालगुजारी वो टैक्स कौन्सिल दिया करेगी लेकिन रांची वो लोहरदगा वो पुरुलिा वो चाईबासा वो चक्रधरपुर मुनसपलेटिओं के मातहद के जायदादों का मालगुजारी वो टैक्स वो झरसुगुदा के हेड कोआटर स्टेशन के मातहद वाले जायदादों का मालगुजारी वा टैक्स कौन्सिल को देना नहीं होगा।

(६) यह कि सब तालाब वो दरखतान (मे लाह दरखतान वो कुल जमीन का इन्तजाम वो पैदावार का तहसील वसुल कौन्सिल करेगी लेकिन अैडभाइजरी बोर्ड के मातहद के बंगले का जमीन वो ट्रसटी से पाए हुए रैयतों के बंगलों का जमीन से कौन्सिल का सरोकार कुछ नहीं रहेगा और सब और सब बगीचों का इन्तजाम वो तहसील वसुल कौन्सिल करेगी लेकिन उन सब बगीचों पर कौन्सिल का कुछ सरोकार नहीं रहेगा जो ट्रसटी से पाए हुए रैयतों के बंगलों के हाता के अन्दर में पड़ता है या जिस को अैडभाइजरी बोर्ड और कौन्सिल दोनों मीलकर गरल स्कूल के लिये दे देवेंगे।

(७) यह कि चाईबासा चक्रधरपुर लोहरदगा पुरुलिया वो रांची मौनसपलेटिओं के मातहद वाले कुल जायदाद का और झरसुगुदा हेड क्वाटर स्टेशन का जायदाद का टैक्स वो मालगुजारी हसब दस्तुर ट्रसटीज दिया करेगी।

(८) यह कि कौन्सिल को यह भी अखतियार रहेगी की मरे हुए दरखतान को काट कर अपने तसरुफ में दर लावे लेकिन जिन्दे गाछों को बेला तहरीरी इजाजत टरसटीज के सेक्रेटरी के नहीं काटेगा खाह वो गाछ फलदार हो या बेफलदार हो।

(९) यह कि हसब जेल मकानात को छोड़ कर बाकी कुल रहने वाले जेल मकानात का इन्तजाम वो मरमती और किराया का आदाए वसुली करने का भार कौन्सिल को रहेगी।

तफशील मकानात जीसका इन्तजाम करना वो मरमती करना इस्रा उसका कीराया वसुल काना कौनशील को नहीं होगा।

(क) रांची कमपाउन्ड के मातहद वाले मकानात।

(ख) स्कूल के मास्टरों को रहने वाले मकानात।

[ग] हसब जेल मकानात।

बुरजू	२ बंगला
चाईंबासा	२ ,,
चैनपुर	१ ,,
चकरधरपुर	१ ,,
गोबिन्दपुर	३ ,,
गोमिला	२ ,,
जाला	१ ,,
भरसुगुदा	२ ,,
कारीमाटी	१ ,,
खुटीटोली	१ ,,
किनबेल	२ ,,
कोन्डरा	१ ,,
कोरन्जों	१ ,,
लोहरदगा	२ ,,
पुरुलिया	५ ,,
राजगांगपुर	१ ,,
रांची	सब बंगला
सोंघानी	१ बंगला
टकरमा	२ ,,
तमाड़	१ ,,
टोकाद	१ ,,

(१०) यह के ऊपर लिखे हुए २१ जगहों से बाहर वाले बील कुल चर्च और चैपेल का मरमत वो इन्तजाम कौन्सिल किया करेगी लेकिन चठी वो चोरदाग वो डीग्रंगबेल व घोघर वो जराकुदर वो कोटबो वो कुड्डु वो मरचा वो तुजुर वो कोटाम वो तपकरा वो उम्बुलबाहा वो जोनहाटोली वो चीउर वो पघलकुदवा के गीरजों वो चेपलों से कौन्सिल को कोई नवे इलाका वो सरोकार बाबत मरमती के नहीं रहेगा।

(११) यह के कुल गीरजों वो चेपलों वो सीमेटरी और रांची कमपाउन्ड वाले डेराखाना को कौन्सिल बेला भाड़ा के अपने तग-

रुफ में लावेगा और गोसनर हाई स्कूल वो गर्ल स्कूल के मका-नात वो होशटल को छोड़ कर बीलकुल स्कूल के मकानातों पर स्कूल आवर के बाद कौन्सिल का अखतियार रहेगा के बेला भाड़ा के अपने तशरुफ में लावे।

(१२) यह के जरुरत पड़ने पर कौन्सिल बगैर भाड़ा के किसी बंगले को अपने तशरुफ में लाने के लिये ट्रसटीज के पास दर-खास्त कर सकती है चाहे वो बंगला भाड़ा में लगा हो या न लगा हो इसका कोई मोजाका नहीं।

(१३) यह के जायदादों को ठीक तौर से रखने वो चलाने के लिये कौन्सिल हरएक पेस्टर को अखतियार देगी की पेस्टर सब बाबत कानुनी बातें निस्बत वसुली मालगुजारी वगैरह के तहरीरी बातचीत ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिमों के साथ खुदही करेंगे और अगर किसी किसिम का फसाद मालिक या रैयत से उठे तो उस हालत में पेस्टर कौन्सिल और ट्रसटीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को फौरन खबर देंगे वो पेस्टर और गौरजों के मोलाजिम जमीन को आबाद करने के बनीसपत कौन्सिल के जीमेवार होंगे।

(१४) यह के जमीन्दार को मालगुजारी वसुल नहीं होने के वजह से अगर किसी किस्म का नोकशानी पहुंचेगा तो उसका जीमेवार कौन्सिल होगी और मिशन के जायदाद मुन्दरजे शीडुल जेल जो जरपेशगी में हैं उसका रुपैया फौरन ट्रसटीज के सेक्रे-टरी या मोलाजिम के पास पेस्टर लोगों को कौन्सिल तम्बीह करेगी और जरपेशगी का मयाद पुरने का खबर भी पेस्टर ट्रस-टीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को दिया करेगी।

(१५) यह के जैसा की होता आरहा है उसी तरह बीलकुल खेत वो मकानात वगैरह पेस्टर वो केटेकीसट वगैरह के तशरुफ के लिये कौंसिल को दिया जायगा बशरते के पेस्टर वगैरह लुथरान के गौरजों का काम करते रहे लेकिन वे सब जायदाद उन लोगों का खास दखल नहीं कहलावेगा और तबदीली या स्तीफा या डीसमिस होने पर पेस्टर वो केटेकीसट से वह सब जायदाद लेली जायगी।

(१६) यह के मालगुजारी वो टेक्स बमोजिब शर्त ५ वो ६ के जो वसुल होगा वह सब का रसीद बोरट औफ ट्रसटीज के

तरफ से दिया जायगा वो इसका नीगहवार कौंसिल रहैगी और उन सब रसीदों को साल बसाल जांच करने के लिये ट्रस्टीज के सेक्रेटरी या मोलाजिम को अखतियार रहेगा।

(१७) यह के रांची को छोड़ कर और सब स्टेशनों में ट्रुष्टीज के तरफ से चोकीदार मोकरर है उसका निगहवानी के लिये कौंसिल बजरीय अपने पास्टर के जवाबदेह रहेगी।

(१८) यह के ट्रुष्टीज और कौंसिल के दरमेयान अगर कोई किसिम का झगड़ा पैदा होतो ट्रुष्टीज का किया हुआ फैसला बहाल रहेगा श्रो कौंसिल श्रो दूसरे शख्श के बीच झगड़ा होने से ट्रुष्टीज के किये हुए फैसला को कौंसिल को मानना पड़ेगा श्रो कौंसिल अपना मोकदमा का पैरवी बजरीय लुथेरान चर्च के एडभैसरी बोर्ड के ट्रुष्टीज के पास कर सकती है।

१९ यह के ट्रुष्टीज यह कौंसिल छव महीना का तहरीरी नोटिस देकर इस एकरारनामे को रद्द कर सकती है।

सही मनेजर ट्रुष्टीज बोर्ड इन्डिया
और चेयरमैन लुथेरान चर्च कौंसिल
छोटानागपुर एकरारनामा छापा लीख
दिया के वख्त पर काम आवे।

दसखत श्रो मोहर दफतर मनेजर बोर्ड ओफ ट्रुष्टीज नदरन इन्डिया से हवाले किया गया है।

लिः ट्रष्टीज नदरन इण्डिया आगे मिनमोकीर से वारीश्रान काएम मोकामिश्रान मिनमोकीर मालिक जायदाद मनकुला श्रो गैरमनकुला हसब सुन्दरजे सिडयुल जैल नम्बर २ जो पहिले लुथेरान मिशन का था श्रो जिसपर मिनमोकीर बजरीए पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० नवीश्ते कष्टोडियन श्रोफ एनिमी प्रोपरटी बिहार एण्ड श्रोड़िसा बनाम बलेनचर्ड कोली इसकवायर श्राइ० सी० एस० श्रौर ऐक्ट ९ सन १९२१ ई० के मोताबिक हासिल है दखलकार है श्रो दखल में श्राजतक चला श्राता है मिनमोकीर बमोजीब राय सभा के जो के तारीख ८ श्रो ९ मार्च सन १९२३ ई० को हुश्रा श्रो उस में यह राय पास हुश्रा के जमीन हशब सुन्दरजे सिडयुल नम्बर १ को साथ एडभैसरी बोर्ड के वास्ते रखने श्रच्छी तरह साथ इन्तजाम के बमोजीब शरत सिडयुल नम्बर २ को बन्दोवस्त कर दिया जाय श्रो एडभैसरी बोर्ड भी सिडयुल नम्बर २ के शरतों को मंजूर करके सिडयुल नम्बर १ के जायदादों को लेने के लिये मंजूर किये हैं श्रो मोताबिक शरत सुन्दरजे पटा मरकुमे १३-१०-१९ ई० के शरत के मोताबिक इन सब लेनी देनी का मंजूरी बड़े लाट साहेब के श्रीरीस्ता से बजरीए चीठ्ठी नम्बर एफ ४६/५६ जेल मरकुमे १७-७-२२ ई० नवीश्ते जोएण्ट सेक्रेटेरी गभर्नमेन्ट श्रोफ इण्डिया बनाम चीफ सेक्रेटेरी गभर्नमेन्ट श्रोफ बिहार एण्ड श्रोड़िसा के किये हैं श्रोर बिहार श्रोर श्रोड़िसा परोभीनसियल लाट साहेब के श्रीरीस्ता से भी बजरीए चीठ्ठी नम्बर ३३५७ सी मरकुमे १३-१२-१९२३ ई० नवीश्ते चीफ सेक्रेटेरी बिहार एण्ड श्रोड़िसा बनाम सेक्रेटेरी मिशन ट्रष्ट मंजूरी किये हैं इसलिये ट्रष्टीज श्रो एडभैसरी बोर्ड में यह तसफिया हुश्रा कि एडभैसरी बोर्ड लुथेरान मिशनवाला जायदाद सुन्दरजे सिडयुल नम्बर १ पर हशब शरत सुन्दरजे सिडयुल नम्बर २ के काबिज श्रो दाखिलकार रहकर जायदाद मनकुला श्रो गैरमनकुला को श्रपने हिफाजत में रखे श्रो जो कुछ नफा या नुकसान जायदाद सुन्दरजे सिडयुल नम्बर २ से पहुंचे उसका जवाबदेह एडभैसरी बोर्ड रहेगी श्रोर छापाखाना का इन्तजाम श्रो मिशन स्टेशन के मातहद के गिरजों को मरम्मत करने का भार भी एडभैसरी बोर्ड को रहेगी इसके श्रलावे चटी चोरदाग श्रो डियंगबेल श्रो घोघोर श्रो जड़ाकुदर श्रो कोटबो श्रो कुड़ु श्रो मरचा श्रो तीजुर श्रो कोठाम श्रो तपकरा श्रो उम्बुलवाहा श्रो जोन्हाटोली श्रो सिजर श्रो पथलकुदवा के गिरजों का देखभाल भी एडभैसरी बोर्ड करेगी।

सिडयुल नम्बर १ बाबत शरत एकरारनामा।

१ यह के लुथेरान मिशन वाला कुल जायदाद पर ट्रस्टीज का वैसाहीं हक हमेसे कायम रहेगी जैसा के पहिले से चला आ रहा है।

२ यह के ट्रसटीज या उस के मोलाजीम लोग को हमेशे अखतियार रहेगा के जिस वखत चाहे एडभैसरी बोर्ड के दिये हुए जायदादों को जाकर जांच करे के एडभैसरी बोर्ड जायदादों को ठीक तोर से चला रहे हैं वो ठीक तोर से उसका इन्तजाम किये हुए हैं या नहीं।

३ यह के जब कभी एडभैसरी बोर्ड वो ट्रस्टीज में किसी बात का तफरका हो तो ट्रस्टीज का हुकुम बहाल रहेगा वो अगर एडभैसरी बोर्ड और कोई तीसरे सखश से किसी किसीम का नाइतफाकी हो तो जो फैसला ट्रस्टीज कर देगी उस फैसले को एडभैसरी बोर्ड को मानना पड़ेगा।

४ यह के कुल जायदाद बमोजीब सीडुल नम्बर २ का टैक्स मालगुजारी वसूल करने का जवाबदेह ट्रस्टीज रहेगी।

५ यह के एभैसरी बोर्ड मो० १०) बरवर्ज सालीआना मालगुजारी बाबत दखल में रखने कुल जमीन मुन्दरजे सीडुल नम्बर २ के ट्रस्टी को दिया करेगी।

६ यह के एडभैसरी बोर्ड कुल जायदाद मुन्दरजे सीडुल नम्बर २ को ठीक तोर से रखेगा वो साथ हैफाजत वो अच्छा इन्तजाम के रखेगा वो सब गिरजाओं को ठीक तोर से मरमत करता रहेगा।

७ यह के एडभैसरी बोर्ड को यह भी अखतियार रहेगी के मरे हुए दरखतान को काट कर अपने तअरूफ में दर लावे लेकिन जीन्दे गाछों को बेसा तहरीरी इजाजत ट्रस्टीज के सेक्रेटेरी के नहीं काटेगा चाहे वो गाछ फलदार हो या बेफलदार हो।

८ यह के जरूरत पड़ने पर एडभैसरी बोर्ड वास्ते लेने समुचा बंगला या बंगले का कोई हिस्सा के वास्ते ट्रस्टीज के पास इतलाय कर सकता है चाहे वो बंगला कीराया में लगा हो या न लगा हो इसका कोई मोजाका नहीं।

९ यह के ट्रस्टीज खाह एडभैसरी बोर्ड को अखतियार होगी के एकरारनामा हाजा को तोड़ देवे लेकिन तोड़ने के छव महीना पहिले नोटिस तहरीरी देना होगा।

सीडुल नम्बर २

तफसील जायदाद मनकुला वो गैर मनकुला ।

१ सब स्कूल वो खेलने का मैदान ।

२ सब मकानात जो के स्कूल के मास्टरों के रहने के लिये है ।

३ नीचे लिखे हुए मिशन के बंगला—

बुरजु	...	२ बंगला
चाइबासा	...	बड़का बंगला
गोविन्दपुर	...	३ बंगला
कारीमाटी	...	१ ,,
कोरोनजो	...	१ ,,
खुटीटोली	...	१ ,,
कोनबेल	...	२ ,,
कोन्द्रा	...	१ ,,
लोहरदगा	...	२ ,,
पुरुलीया	...	१ ,,
रांची	...	३ ,,

जिसका नाम जकनट बंगला वो चारक हाउस वो वीशटे बंगला है ।

टोकाद	...	१ बंगला
तमाड़	...	१ ,,
टकरमा	...	२ ,,

४ लोहरदगा वो रांची का असपताल ।

५ लोहरदगा का लेपर असाइलम वो फौकसहोम ।

६ मकानात जो के असपताल के मोलाजिमों के रहने के लिये रांची वो लोहरदगा में है वो जो खुटीटोली में कमपाउन्डर के रहने के लिये है

७ गोशनर हाई स्कूल वो मै होस्टेल वो बंगला वो हाता ।

८ रांची का थीओलोजिकल शेमीनरी मै हाता वो घर ।

९ गोशनर इभेनजेलिकल लुथेरान परेश रांची ।

सही—कनेडे मनेजर बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज
ताः २३ नवम्बर सन १९२३ ई० बा. खास

सही—जे जेड होज चेयरमेन एडभैसरी बोर्ड
गोशनर एवंजेलिकल लुथेरान चर्च
छोटानागपुर और आसाम
ताः २३-११-२३ ई०

गोवाह—पी टी मारटिन एस पी जी मिशन रांची
ताः २३-११-२३ ई०

गोवाह—एस के दत्त ५ रसल इसट्रीट कलकत्ता

NO. 1121/53.

From

Rev. Joel Lakra, M.A., B.D., S.T.M,
President,
G.E.L. Church Chotanagpur and Assam, Ranchi.

To

The Additional Under Secretary
to the Government of Bihar,
Revenue Department,
Patna.
Dated 30th July, 1953.

Sir,

On behalf of the G.E.L.Mission at Chakradharpur I [illegible] before the Government for their very kind consideration and necessary action.

1. That the G.E.L.Mission has a compound comparatively small in area within the Municipality of Chakradharpur in the District of Singbhum plot No.663 in the Municipal Survey Map.

2. That there is a School besides a residential bungalow and few residential quarters as line houses.

3. That there is no Church building but that in the compound a site has been selected where a Church building is to be erected for the worship of the Christians.

4. That this compound and the Church are meant not only for the Christians of the town of Chakradharpur but also for the whole Christian population of Chakradharpur area comprising Chakradharpur and Manoharpur thanas.

5. That there is no regular school building as yet, but a school and a boarding are to be erected in the compound.

6. That there are no teachers' quarters and they must be erected along with the school buildings.

7. That there must be a school garden and a play ground according to the school rules within the school premises.

8. That as a religious institution, the Church hopes to ~~to~~ open a medical work within the compound preferably a hospital and as such, the Church will need a hospital buildings a doctor's and compounder's quarters. Also different wards and blocks and other establishments for nurses, servants etc.

9. That the Mission compound in question is meant and is being used for such public purposes.

10. That half of plot No.663 and another piece of ground measuring 120 ft. x 120 ft. on the road side belonging to the same plot No.663 are proposed to be acquired by Government for the extension of a tank as it appears. Thus the selected site for the Church building school and Boarding houses and of the hospital establishments are all proposed to be acquired whereas the Mission needs more lands for school play ground and school garden.

11. That the said property is a religious property and cannot be acquired for any purpose, *according to the consitution of India.*

12. That when preliminary actions were taken for acquisition of this property, the officers of the Church concerned were out of the country in Europe and were unable thus far to take any action to ~~to~~ prevent the acquisition.

13. Now the whole G.E.L. Church, numbering about 1,200,000 baptised men and women offer a most emphatic protest against this strange proposal for acquisition of a religious and public [illegible]

Under the circumstances it is respectfully and most earnestly requested and urged that the proposal for acquisition of the religious property half of plot No.663 within the Municipality of Chakradharpur and another piece 120 ft. x 120 ft in the same plot may kindly be withdrawn and for this act of kindness the G.E.L.Church will ever remain grateful.

I beg to remain

Yours faithfully,

President,
G.E.L.Church Chotanagpur &
Assam,Ranchi.

Memo No. 1125/53 Dt. 6-8-53.
Copy to Rev. D. Hemrom G.E.L Church, Chakradharpur for information.

PRESIDENT G.E.L. CHURCH
CHOTANAGPUR & ASSAM.
RANCHI.

342

Khata
plot 663
area 1.78

Land Acquisition Officer
Chaibassa
Singhbhum

Sub: Acquisition of G.E.L. church lands measuring approximately 1.78 acres at Chakradharpur for Kata Bandh Nala and Children's Park

Sir,

With reference to the Government declaration no. 4692 dated 15th April 1958 published in the Bihar Gazette of 14.5.58 on the subject mentioned above I ~~have~~ beg to object to the acquisition of the G.E.L. church lands on the following grounds:

(1) That the G.E.L. church in Chotanagpur & Assam, the owner of the said land in question, is holding the said land for the purpose of the church which is a public institution, and such the church cannot agree to part with it.

(2) That in 1958. similar type of acquisition proceedings were held during which we have also objected to the G.E.L. church lands being acquired. Originally ~~plot~~ municipal plot no. 524 was proposed to be acquired for a children's park. The Chakradharpur municipality through proposed to acquire part of municipal plot no. 663 belonging to the G.E.L. church. The church then filed an objection under their letter no 1121/53 of 6.6.53

(3) That this is the third time that the govt. are proposing to acquire a portion of the G.E.L. church lands although they know for a long time that the church is objecting to it.

(4) The G.E.L. church is holding that land for the purpose of the ~~G.E.L.~~ church and they have their own projects to build church buildings, schools & hostels which will be useful to the public in general.

(5) We feel that the acquisition

Sent Copy to P.D. Kandulna 19.2.53

No. E.328R

14

From

Shri B. Prasad, I.A.S.,
Deputy Commissioner, Singhbhum,

To

The Commissioner, Chotanagpur Division, Ranchi.

Chaibasa the 9 Sep 1953.

Date of receipt 26/9/53
Diary No. 468
File No. 14
No. and date of reply

Sub:- Acquisition of 120' x 120' of land out of plot No. 663 for the construction of a Children's Park at Chakradharpur.

Sir,

The plot no. 524 of Chakradharpur was originally proposed for acquisition for a Children's Park by the Chakradharpur Municipality and was notified u/s 4 of L.A. Act for the same. The owner of plot no. 524 objected and his petition was forwarded to Govt. recommending the objection to be rejected. But the objection petition of the owner was sent back to Deputy Commissioner, Singhbhum, calling for a further report and pointing out that plot no. 663 (portion) can as well serve the purpose for a Children's Park. The Land Acquisition Officer held a local inspection on 31.3.53 of plot no. 663 (portion) and has already expressed his views that Mission would raise objection to its acquisition in his report dt. 31.3.53 a copy of which has been forwarded to you with this office letter no. 3503R dt. 13.5.53, pointing out that the purpose of Children's Park would be served by the acquisition of a portion out of plot no. 663 which is at present a property of G.E.L. Church, Chotanagpur and Assam, Ranchi, and that publication of fresh notification u/s 4 of L.A. Act would be necessary if it is decided to acquire portion out of plot no. 663. The matter is still pending with Government.

A copy of the letter of the President of the Mission - no. 1121/53 dt. 6.8.53, in continuation of this office letter no. 3503R dt. 13.5.53, is sent herewith.

Yours faithfully,

[signature]

Deputy Commissioner, Singhbhum.

Pm 6.9.

C-7.9

Memo No. E.328R Chaibasa the 9 Sep 1953.

Copy forwarded to the Rev. J. Lakra, M.A. B;D.S.T.M., President, G.E.L. Church, Chotanagpur and Assam, Ranchi for information with reference ~~xx~~ to his letter no. 1121/53 dt. 6.8.53.

[signature]

Deputy Commissioner, Singhbhum.

Pm 6.9.

Memo No 1371/53 D/ 25.9.53
copy to be sent to
Mr. P.D. Kandulna
27 Hume-Pipe Road
Jamshedpur.
[signature]
25/9/53

No.6384 R.

From
Shri B. Prasad, I.A.S.,
Deputy Commissioner, Singbhum,

To The Commissioner, Chotanagpur Division, Ranchi.
Chaibassa, the 11th September, 1953.

Sub:-Acquisition of 120'x 120' ~~land~~ of land out of plot No.663 for the construction of a Children's Park at Chakradharpur.

Sir,

The plot No.524 of Chakradharpur was originally proposed for acquisition for a Children's Park by the Chakradhapur Municipality and was notified u/s4 of L.A.Act for the same. The owner of plot No.524 objected and his petition was forwarded to Government, recommending the objection to be rejected. But the objection petition of the owner was sent back to Deputy Commissioner, Singbhum, calling for a further report and pointing out that plot No.663 (portion) can as well serve the purpose for a children's Park. The Land Acquisition Officer held a local inspection on 31.3.53 of plot No.663(portion) and has already expressed his views that Mission would raise objection to its acquisition in his report dt.31.3.53 a copy of which has been forwarded to you with this office letter No.3503R, dt.13.5.53 pointing out that the purpose of Children's Park would be served by the acquisition of a portion out of plot No.663 which is at present a property of G.E.L.Church Chotanagpur and Assam, Ranchi, and the publication of fresh notification u/s 4 of L.A.Act would be necessary if it is decided to acquire portion out ~~of~~ of plot No.663. The matter is still pending with Government.

A copy of the letter of the President of the Mission-No.1221/53 dt.6.8.53 in continuation of this office letter No.3503R, dt.13.5.53, is sent herewith.

Yours faithfully,
sd/- Illigible.
Deputy Commissioner, Singbhum.

C-7.9

Memo No.6384 R Chaibassa the 11th September, 1953.
Copy forwarded to ~~the~~ the Rev.J.Lakra, M.A., B.D., S.T.M., President, G.E.L.Church, Chotanagpur and Assam, Ranchi, for information with reference to his letter No.1221/53 dt.6.8.53.

sd/- Illigible.
Deputy Commissioner, Singbhum.

Memo No. 1371 /53 Ranchi, the 25th September, 1953.

Copy forwarded to Mr.P.D.Kandulna, B.A., Manager, Secretary & Treasurer, Board of Management, G.E.L.Church Properties, 27 Hume Pipe Road, Jamshedpur, for information and necessary action. in Continuation of this office No 1122/53 dt. 6-8-53

25-9-53
Secretary
G. E. L. CHURCH
CH. NAGPUR & ASSAM
RANCHI

B.L.

THE COUNCIL OF
The Gossner Evangelical Lutheran Church
in Chotanagpur & Assam.
RANCHI, (Behar) INDIA.

Memorandum.

Raphael Toppo – Bhaunskund
P.O. Chainpur

Heran Sanead – Kabupani
P.O. Simdega

~~Christ Jubin Dungdung~~
~~Simdega~~

Schedule VI—(N. S.) Form No. I.

COURT FEE INDIA TWELVE ANNAS 12As | COURT FEE INDIA THREE ANNAS 3As

Ward No. Sheet No.

वार्ड नम्बर ५ शीट नम्बर

९२

Plot प्लाट नम्बर	Holding होलडिङ्ग नम्बर	Street. नाम सड़क या गली जिसमें होलडिङ्ग है	Owner. नाम मालिक का मय वल्दियत, कौमियत और सकूनत।	Occupier. नाम दखलकार का मय वल्दियत, कौमियत और सकूनत।	Description. ब्यान प्लाट नम्बर मय ब्यान मकानात।	Total area. कुल रकवा।	Plinth area. मकान के प्लिन्थका रकवा।	Remarks. कैफियत।
१	२	३	४	५	६	७	८	९
६७१		[illegible]	[illegible] ६५२	[illegible]	[illegible]	१-५२६		
६७२		[illegible]	[illegible] ६५२	[illegible] ६७१	[illegible]	०-६५५		
६७३		[illegible]	[illegible] ६५२	[illegible]	[illegible]	१-२०८		३/१ [illegible] ६२
६७४		[illegible]	[illegible] ६५२	[illegible] ६७३	[illegible]	०-६३१		३/१ [illegible] /१

[illegible] 19/4/44.

MUNICIPAL [illegible] 19/4/44

दि युनाईटेड प्रेस लिमिटेड, भागलपुर।

Schedule VI—(N. S.) Form No. I.

Ward No.
वार्ड नम्बर 2

Sheet No.
शीट नम्बर

MUNICIPAL SURVEY

KHASRA.

Page No.
सफा नम्बर 92

Plot प्लाट नम्बर	Holding होलडिङ्ग नम्बर	Street. नाम सड़क या गली जिसमें होलडिङ्ग है	Owner. नाम मालिक का मय वल्दियत, कौमियत और सकूनत।	Occupier. नाम दखलकार का मय वल्दियत, कौमियत और सकूनत।	Description. ब्यान प्लाट नम्बर मय ब्यान मकानात।	Total area. कुल रकवा।	Plinth area. मकान के प्लिन्थका रकवा।	REMARKS. कैफियत।
१	२	३	४	५	६	७	८	९
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	टांड़	0.452		[illegible]

Record finally framed & published Under Section 10(1) of the Bihar & Orissa Municipal Survey Act, Act 1 of 1920 on the 25th Sept 1929.

Sd. G. H. Houlton
Superintendent of Survey

Copied by
[illegible]
18/4/1944

Certified to be true copy
Gaurishankar
Record-Keeper.
Compared by Ranchi Municipality
19/4/44.

G. Shanker
19/4/44.

दि युनाईटेड प्रेस लिमिटेड, भागलपुर।

Ranchi Station.

Cr — Dr.

1. Ranchi. हाता के भीतर क्या २ आमदनी की जाद की चीजें हैं जिनसे महिनवार या सालवार
2. Pathalkudwa @ 2/- — 24-0-0 आमदनी आती है।
3. Lalganj ✓ जंगल है और जमीन
4. Chama Nagri ✓ खेत है
5. Jojo Sering — ✓ खेत है
6. Karmati — ✓ खेत है
7. Makunda — — खेत है
8. Changani — — — 51-12-0.
9. Tanganbansli — — — — — 29-12-0.
10. Malti —
11. Bargari — ✓
12. Raghunathpur ✓ —
13. Lali — ~~23-8-0~~.
14. Kharsidag ✓
15. A. Kharsidag.
16. Karkata ✓
17. Sorha ✓
18. Debidih ✓
19. Ara — ✓
20. Zigra — ✓
21. Kinbitha ✓
22. Dokad. — — — 107-8-0 — — — 45-8-0.

	Cr.	Dr.
23. Barango ✓		
24. Chiur ✓		1-0-0.
25. Murgidih ✓		0-2-0.
26. Daudih ✓		
27. Dami		
28. Dami	25-0-0	12-6-0.
29. Banjhila ✓		
30. Rani Khatanga		
31. Jhinjri		
32. Harser ✓		
33. Murgu ✓		
34. Hatma ✓		
35. Kutetola ✓		
36. Churi Lodhma ✓		
~~Malgo~~ ✓		

Lohardaga Station.

1. Lohardaga ✓	85-0-0.
2. Sero ✓	0-8-0.
3. Samsera	0-14-0.
4. Bharmo	1-4-0.
5. Lawagain	2-0-0.
6. Lawagain	
7. Jingi	0-10-0.

	Cr.	Dr.
8. Jingi		0-11-0.
9. Jingi		0-11-0.
10. Sitthiyo		0-8-0.
11. Chapka ✓		
12. Dumri ✓		0-5-0.
13. Chilakoni ✓		0-4-0.
14. Jaku ✓		0-2-0.
15. Honhe		0-4-0.
16. Zingria ✓		0-2-0.
17. Kairo ✓		0-2-0.
18. Cheto Kairo ✓		0-2-0.
19. Ditto ✓		0-2-0.
20. Koka ✓		0-1-0.
21. Chapka ✓		0-2-0.

Gumla Station.

1. Gumla		4-8-0.
2. Kulmunda ✓		
3 Bhalolam Chutti ✓		6-6-6.
4. Chetar ✓		4-8-0.
5. Raghunathpur ✓		

Chainpur Station

	Cr.	Dr.
1. Chainpur ✓		
2. Chainpur ✓		17-5-0.

Kondra Station

1. Kondra.
2.

Kinkel Station

	Cr.	Dr.
1. Kinkel		23-2-5.
2. Karamdih		5-0-0.
3. "		
4. "		
5-Bendojor ✓		18-8-0.
6. Jatatoli ✓		
7. Karnijara ✓		
8. "		
9 Kinkel ✓		
10 Do		
11. Do		
12. Do		
13. Do		

	Cr.	Dr.
14. Kinkel		
15 Do		
16 Do		
17 Do		
18 Do		
19 Do		
20 Do		
21 Do		
22 Sawan (Gariajortola		
23. Jhumkaphhappar.		

Khutitoli Station

1. Khutitoli		21-4-0.
2. Do		
3. Ghosra		21-4-0.
4. Bara Barapani		
5. Gotra		
6.		

Korongo Station

1. Korongo		5-0-0.
2. Do		
3.		

Takarma Station

	Cr-	Dr.
1. Takarma		
2. Do		0-4-0.
3. Kurloga		
4. Kemerkel		0-4-0
5. Bartola		0-8-0.
6. Ditto		0-8-0.

Govindpur Station

1. Gusatoli	
2. Rehergara	
3. Nindhia	5-13-0.
4. Do	0-7-9.
5. Do	
6. Singara	
7. Chapi	
8. Do	
9. Chapi	0-10-0.
10. Do	
11. Do	
12. Bhusur	9-4-6.
13. Katsemla	1-0-0.
14. Kotbo	
15. Do.	
16. Pakra	
17. Kurimul Pokela	

	Cr.	Dr
18. Churdag		
19. Token		
20. Merombir		
21. Jurdag		
22. Sulungi		
23. Uchur		
24. Bala		
25 Marcha		
26. Do		1-8-0.
27. Do		

Burju Station.

1. Burju		
2. Binda		
3. Murungtola		
4. Perka		
5. Rewa		1-0-0.
6. Lumluma		
7. Ruitola		

Tamar Station

1. Amlesa		1-0-0.
2. Kulihatu		

Purulia station

1. Manguria
2.

Chaibassa Station

	Cr	Dr
1. Chaibassa		
2. Baribazar		3-10-0.
3. Simyang		
4. Pindargaria		
5. Dukurdiha		

Chakradharpur Station

1. Chakradharpur
2. Ditto

Tokad Station

1. Tokad	
2. Tujur	15-2-0.
3. Berawinding	10-0-0.
4. Pinding	0-1-0.

Singhani Station

1. Singhani	25-0-3.
2. Jala	14-7-6.
3. Bargaon	15-5-6.

Jharsaguda Station

1. Jharsaguda	27-0-0.